Paper - V

MT

2018 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - PRELIM - I - PAPER - V

Time : 3 Hours **Model Answer Paper** **Max. Marks : 80**

विभाग 1 - गद्य

उ.1. (क) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) समझकर लिखिए।

(i) **यह है वाणी -**

(1) मनुष्य के चिंतन का फलित। ½

(2) चिंतन का साधन। ½

ii) **इन पर निर्भर है मनुष्य के जीवन का समाधान।**

(1) वाणी के संयम पर। ½

(2) वाणी के सदुपयोग पर। ½

2) i) **सत्य या असत्य लिखिए।**

(1) सत्य ½

(2) असत्य ½

ii) **सहसंबंध लिखिए।** 1

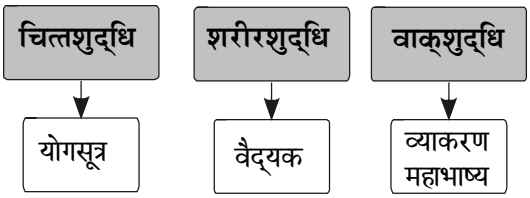

3) i) **निम्नलिखित शब्द मानक वर्तनी के अनुसार लिखिए।**

(1) बडी - बड़ी ½

(2) चिन्तन - चिंतन ½

ii) **समानार्थी शब्द लिखिए।**

(1) मनुष्य - मानव ½

(2) समाधान - हल ½

4) मानव जीवन में वाणी का विशेष महत्तव है । वाणी मनुष्य को ईश्वर द्वारा दी गई अनमोल देन है । वाणी ही एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को व्यक्त कर सकता है । मनुष्य के सारे चिंतनशास्त्र वाणी पर ही आधारित हैं । भाक्तिमार्ग में वाणी से भगवान का नाम लेते रहने का उपदेश दिया गया है । वाणी में अद्‌भुत शक्ति होती है । वाणी से ही मित्रता होती है और वाणी से ही वैर भी होता है । हमारे सारे व्यवहारों का आधार वाणी ही है । इसलिए हमारी वाणी शुद्‌ध होनी चाहिए । इतना ही नहीं शुद्‌ध होने के साथ - साथ सभ्य भी होनी चाहिए । **2**

उ.1. (ख) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **कृति पूर्ण कीजिए ।** **1**

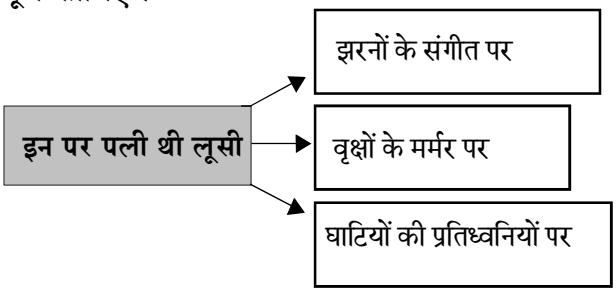

ii) **उत्तर लिखिए।** **1**

(1) चिड़िया के बारे में एक मार्मिक लोककथा ।

(2) 'वर्डस्वर्थ' की 'लूसी' की तरह ।

2) i) **उचित पर्याय चुनकर पूर्ण वाक्य फिर से लिखिए।**

(1) हमारी उत्सुकता देखकर मैनेजर ने बताया कि **इस पक्षी के बारे में एक लोककथा कूर्मांचल में प्रचलित है।** ½

(2) यह चिड़िया बराबर बोलती है **जुहो-जुहो-जुहो।** ½

ii) **उत्तर लिखिए।**

(1) चिड़िया। ½

(2) जुहो-जुहो-जुहो। ½

3) i) **निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी लिखिए।**

(1) निरंतर - लगातार ½

(2) प्रचलित - विख्यात ½

ii) **निम्नलिखित शब्दों के विरुद्‌धार्थी शब्द लिखिए।**

(1) परिचित - अपरिचित ½

(2) गरीब - अमीर ½

4) हिमालय और पर्यावरण का संबंध बहुत गहरा है । यदि हिमालय न होता तो भारत के अधिकांश उत्तरी भाग में मरुभूमि होती । हिमालय ही पूर्वी तथा दक्षिणी मानसूनी हवाओं को रोककर भारत के उत्तरी राज्यों में वर्षा कराता है । इन राज्यों की सभी नदियाँ वर्षा ऋतु में जल से भरी रहती हैं । वर्षा की समाप्ति के बाद भी गंगा, यमुना आदि नदियों में हिमालय का बर्फ पिघलने के कारण जल रहता है । हिमालय पर अनेक प्रकार के जीव-जन्तु तथा वनस्पतियाँ पाई जाती हैं, जो पर्यावरण संतुलन में महती भूमिका अदा करती हैं । **2**

उ.1. (ग) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **उत्तर लिखिए :** **½**

बिना श्रम किए जो भोजन करता है, वह व्यक्ति चोर है।

ii) **उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :** **½**

महात्मा गांधी का समस्त जीवनदर्शन **श्रम - सापेक्ष** था।

2) **आकृति पूर्ण कीजिए :** **1**

अपराधों में वृद्धि होना	← **बापू की नीतियों की उपेक्षा करने का परिणाम** →	बेरोजगारी पर नियंत्रण न होना।

3) मनुष्य के जीवन में श्रम का बड़ा महत्व है। श्रम का अर्थ है- मेहनत। श्रम सफलता की कुंजी है। अंग्रेजी में कहावत है- (Work is Worship) सचमुच काम ही ईश्वर की सच्ची पूजा है। जहाँ श्रम है वहीं स्वावलंबन है। और जहाँ स्वावलंबन है वहीं स्वर्ग है। किसी की दया पर जीना मृत्यु के समान होता है। अपाहिज व्यक्ति भी दूसरों के भरोसे जीना पसंद नहीं करता। वह परिश्रम करके सम्मान की रोटी खाना चाहता है। किसान के श्रम से ही हम सबका पेट भरता है। डाक्टरों का श्रम ही मरीजों को नया जीवन देता है। विद्यार्थी श्रम करके ही विद्या प्राप्त करते हैं। श्रम करने वाले प्राय: स्वस्थ और निरोगी होते हैं। उनकी पाचन शक्ति अच्छी रहती है। श्रम करने से उनका अच्छा व्यायाम हो जाता है। सचमुच जीवन में सफलता के फूल श्रम के पौधे पर ही खिलते हैं। **2**

विभाग 2 - पद्य

उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) i) (1) **1**

कृष्ण के ब्याह में बाराती होंगे
सब सखा

(2)

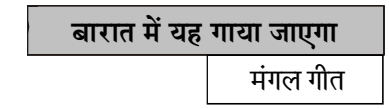

1

ii) **आकृति पूर्ण कीजिए।** 1

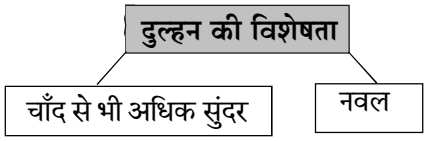

2) i) **उत्तर लिखिए।** ½

कृष्ण तुरंत ब्याह करने के लिए जाना चाहते हैं।

ii) चाँद से भी अधिक सुंदर दुल्हन से शादी होगी, यह सुनकर कृष्ण प्रसन्न होते हैं। ½

3) i) (1) चन्दा - चंदा ½

(2) मङ्गल - मंगल ½

ii) (1) सौंगध - सौंह ½

(2) नया - नूतन ½

4) सूरदास जी कहते हैं कि कृष्ण को खुश करने के लिए माता यशोदा उनके कान में कुछ कहती हैं । वे कहती हैं कि मैं दाऊ को कुछ नहीं बताऊँगी और चाँद से भी अधिक सुंदर नई दुल्हन से तेरा ब्याह कराऊँगी। यह बात सुनकर बालक कृष्ण प्रसन्न हो जाता है और कहता है कि मेरी बात सुनो माँ, मुझे तेरी सौगंध है, मैं अभी विवाह करने जाऊँगा। सूरदास जी हमें बता रहे हैं कि बालक कृष्ण माँ यशोदा से कहते हैं कि सभी साथी (ग्वालबाल) हमारे बाराती होंगे और मैया, तुम मंगलगीत गाना। **2**

उ.2. (छ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **सोचकर लिखिए।** 1

ii) (1) भाल (2) आँखें 1

2) i) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

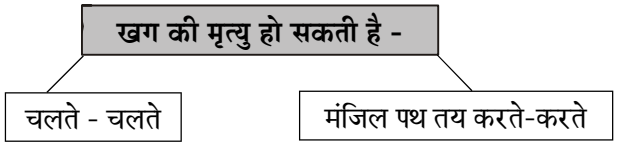

ii) **उत्तर लिखिए।**

(1) अपने मस्तक पर ½

(2) अपनी आँखों पर ½

3) i) (1) खाक - धूल या राख ½

(2) मंजिल - ध्येय या लक्ष्य ½

ii) (1) करते - करते ½

(2) चलते - चलते ½

4) कवि खग को प्रेरित करते हुए कहते हैं कि हे खग, यदि मंजिल पथ पर लगातार उड़ान भरते - भरते मर भी गए तो सारी दुनिया तुम्हारी भस्म का तिलक लगाकर, गर्व से सिर ऊँचा किए तुम्हारी शहादत को ससम्मान नमन करेगी । तुम्हारे बलिदान को आदर्श माना जाएगा और संसार तुम्हें अपने सिर - आँखों पर चढ़ाकर अमर कर देगा। **2**

विभाग 3 - पूरक पठन

उ.3. **पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) i) **कृति पूर्ण कीजिए।**

(1) 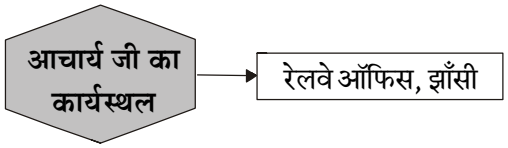

½

(2) 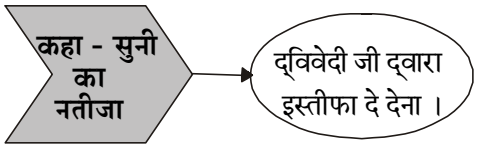

½

ii) **उत्तर लिखिए।**

(1) अंग्रेज अफसर और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की। ½

(2) अंग्रेज अफसर और उनके मित्रों ने । ½

2) स्वाभिमान एक मानवीय गुण है। जिसके पास स्वाभिमान होता है, वह व्यक्ति स्वाभिमानी कहलाता है। स्वाभिमान यानी कि स्वयं पर अभिमान। ऐसा अभिमान, जो सकारात्मक होता है। जिसके पास स्वाभिमान होता है, वह कभी भी किसी के सामने अपने हाथ नहीं फैलाता है। ऐसा व्यक्ति कभी भी लाचार या बेबस नहीं होता है। ऐसा व्यक्ति कभी भी किसी से दया की भीख नहीं माँगता है। स्वाभिमान व्यक्ति में अद्‌भुत ऊर्जा का संचार करता है। **2**

विभाग 4 - व्याकरण

उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) i) **निम्नलिखित शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।**
दुश्वार - महँगाई में जीना दुश्वार हो गया है । **½**

ii) **अधोरेखांकित शब्द का भेद पहचानिए ।** **½**
गरीबी - भाववाचक संज्ञा ।

2) **निम्नलिखित वाक्य शुद्‌ध करके लिखिए ।** **1**
राजा **का** हुक्म टल नहीं **सकता** ।

3) i) **निम्नलिखित सहायक क्रिया का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **½**
भिश्ती ने चूने में पानी ज्यादा डाल **दिया** ।

ii) **सहायक क्रिया छाँटकर लिखिए ।** **½**
लिया (लेना) - सहायक क्रिया ।

4) **प्रेरणार्थक क्रिया के रूप लिखिए ।** **1**

क्रिया	**प्रथम प्रेरणार्थक**	**द्‌वितीय प्रेरणार्थक**
बैठना	बिठाना	बिठवाना

5) i) **अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **1**
यहाँ मेरे **अतिरिक्त** कोई नहीं मिलेगी ।

ii) **अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए ।** **1**
जब - तब – समुच्चय बोधक अव्यय ।

6) **कालपरिवर्तन कीजिए ।** **2**
i) हम दिल्ली आ गए हैं ।
ii) मानो जिंदगी की डोर हाथ में आ जाएगी ।

7) i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए ।** **1**

जान के लाले पड़ना - प्राण संकट में होना ।

वाक्य :- शिकारी के जाल में फँसी हुई चिड़िया की **जान के लाले पड़ गए ।**

ii) **अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए ।** **1**

मामाजी को आते देखकर छोटी राधा **खिलखिलाकर हँसने लगी** ।

विभाग 5 - रचना

उ.5. परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए । **5**

करन वेद
बगीचा बिल्डिंग,
कोल्हापुर ।
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान कोतवाल साहब,
शहर विभाग,
कोल्हापुर ।

विषय : सार्वजनिक गणेशोत्सव के समय ध्वनि प्रदूषण की शिकायत ।

माननीय महोदय,

मैं आपके शहर का निवासी हूँ । दसवीं कक्षा में पढ़ता हूँ । इस पत्र द्वारा मैं रेकार्ड बजने के कारण अध्ययन में पड़नेवाली बाधा की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ ।

शहर में आजकल चारों तरफ गणेशोत्सव की धूम है । दिन-रात शहर में रिकार्ड बज रहे हैं । परीक्षा करीब है और पढ़ाई ठीक से नहीं हो पा रही है । आवाज़ इतनी तेज रहती है कि पढ़ने में मन नहीं लगता है। हम कई बार रेकार्ड बजानेवालों से शिकायत कर चुके हैं लेकिन उन्होंने हमारी बात पर ध्यान नहीं दिया । उत्सव के कारण किसी की व्यक्तिगत जिंदगी प्रभावित नहीं होनी चाहिए । रिकार्ड बजाने की समय-सीमा निर्धारित होनी चाहिए ताकि हम शांतिपूर्ण ढंग से अध्ययन कर सकें । यह हमारे भविष्य का प्रश्न है ।

अत: आपसे प्रार्थना है कि विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए उचित कार्यवाही करने की कृपा करें ।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।

धन्यवाद !

भवदीय,
करन वेद ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान कोतवाल साहब,
शहर विभाग,
कोल्हापुर।

प्रेषक,
करण वेद,
बगीचा बिल्डिंग,
कोल्हापुर ।

अथवा

महेश शर्मा
गांधी नगर,
अमरावती - 355421
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी जी,
महानगर पालिका,
अमरावती - 355421

विषय : अशुद्ध जल की आपूर्ति के संबंध में शिकायत पत्र ।

माननीय महोदय,

मैं आपके शहर का एक निवासी हूँ । इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान शहर में हो रहे अशुद्ध जल की आपूर्ति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ ।

बड़े दुख के साथ आपको सूचित करना पड़ रहा है कि पिछले कई दिनों से शहर में अशुद्ध जल की आपूर्ति की जा रही है । अशुद्ध जल पीने से सारा शहर महामारी की चपेट में आ गया है । लोग डायरिया जैसी भयंकर बीमारी के शिकार हो रहे हैं । लगता है जल में विषाणु फैल गए हैं । महानगर पालिका के अधिकारी अब तक अनजान बने हुए हैं और नगर निवासी परेशान हैं । शुद्ध जल की आपूर्ति के बिना बीमारी पर नियंत्रण पाना असंभव है । यदि समय रहते ध्यान न दिया गया तो स्थिति और भी बिगड़ सकती है ।

अत: आपसे प्रार्थना है कि जनहित को ध्यान में रखते हुए तत्काल उचित कार्यवाही करने की कृपा करें ।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।

धन्यवाद !

भवदीय,
महेश शर्मा ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी जी,
महानगर पालिका,
अमरावती - 355421

प्रेषक,
महेश शर्मा,
गांधी नगर,
अमरावती - 355421

2) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में कहानी लिखकर शीर्षक दीजिए । 5

जैसे को तैसा

एक घने जंगल में कई प्रकार के पशु-पक्षी आराम से रहते थे । वहीं तालाब के पास एक सारस भी रहता था । उसकी टाँगें और चोंच पतली और बड़ी लंबी थीं । वह मछलियों को अपनी चोंच में पकड़ता और खाता था । एक दिन एक धूर्त लोमड़ी के यहाँ से सारस को भोजन का निमंत्रण मिला । सारस बड़ा ही प्रसन्न हुआ ।

लोमड़ी के घर भोजन में स्वादिष्ट खीर बनाई गई थी और उसे थाली में परोसा गया था । सारस की चोंच लंबी थी, उसे खीर खाने में बड़ी मुश्किल हुई और वह कुछ न खा सका । यह सब देखकर सारस कुछ न बोला और मन ही मन इसका बदला लेने की बात सोचता हुआ घर लौटा । कई दिनों के बाद एक दिन उसे मौका मिल ही गया । सारस ने लोमड़ी को भोजन का निमंत्रण दिया । वह बहुत खुश हो गई और सारस के यहाँ पहुँच गई । सारस ने स्वादिष्ट खीर बनाई और सुराही में खाने के लिए परोसी । सुराही की गर्दन का आकार पतला था उसमें उसका मुँह नहीं जा सकता था । अत: लोमड़ी कुछ न खा सकी और उसे भूखा रहना पड़ा और वह बहुत शर्मिंदा हुई ।

सीख : इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि जो जैसा कर्म करेगा, उसको वैसा ही फल मिलेगा ।

3) निम्नलिखित गद्यखंड को ध्यानपूर्वक पढ़कर पाँच प्रश्न तैयार कीजिए, जिनका उत्तर एक वाक्य में लिखा जा सके । 5

(1) किन बातों को देखकर मित्रता की जाती है ?
(2) हमारे और मित्र के बीच क्या होनी चाहिए ?
(3) मित्र किसे नहीं कहना चाहिए ?
(4) सच्चा मित्र कैसा होता है ?
(5) मित्रता के लिए क्या आवश्यक नहीं है ?

उ.6. 1) प्रसंग लेखन । (लगभग 60 से 80 शब्दों में) 5

मैं ग्रीष्मावकाश में गाँव गया था । नब्बे वर्ष के रामू काका को आम का पौधा लगाते देख मैं स्तब्ध रह गया । मन में सोचा कि इन्हें तो इस पेड़ के आम खाने के लिए नहीं मिलेंगे । फिर भी वे पौधा लगा रहे हैं। मैंने जिज्ञासावश उन्हें इस बारे में पूछा तो उन्होंने कहा, तो क्या हुआ बेटा ? भले ही इस पेड़ के फल खाने के लिए मैं जीवित नहीं रहूँगा । तुम तो जीवित रह सकते हो और फिर तुम्हारी आने वाली पीढ़ी इसके फल जरूर खाएगी । इसी से मुझे संतुष्टि मिलेगी ।

उनके इस कथन को सुनकर मैंने कहा, काका जी, आजकल तो भलाई का जमाना नहीं रहा । लोगों को अपने बारे में सोचने के लिए वक्त नहीं है लेकिन आप जैसे कई लोग आज भी दूसरों के बारे में सोच रहे हैं और मानवता के कार्य में अपना योगदान दे रहे हैं । हाँ बेटा, मानवता से बढ़कर कोई भी कार्य नहीं होता । तुम भी इस कार्य को अपनाकर अपने आप को धन्य कर पाओगे । काका जी के इस कार्य से मुझे सिर्फ प्रेरणा ही नहीं बल्कि मेरे अंदर एक ऐसे अद्‌भुत आत्मविश्वास का संचार हुआ, जिसका वर्णन कर पाना मेरे लिए एक कठिन कार्य होगा ।

2) स्वमत : (लगभग 60 से 80 शब्दों में) **5**

आज हमें बढ़ती गर्मी, अकाल, सूखा आदि प्राकृतिक आपदाओं के साथ जूझना पड़ रहा है । यदि इन सभी पर रोक लगानी है तो हमें पेड़ लगाने चाहिए । प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम एक पेड़ तो लगाना ही चाहिए । तब जाकर हम वैश्विक ऊष्मा वृद्‌धि पर रोक लगा सकते हैं । पेड़ हमें फल, फूल, लकड़ी, छाँव एवं प्राणवायु देते हैं। यदि हम उनकी रक्षा करेंगे तो ही हमारा भविष्य उज्ज्वल बन सकता है । पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने में पेड़ हमारी मदद करते हैं । इन्हीं पेड़ों पर पंछी रहते हैं। वे हमारे साथी हैं । मानव ने पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की है । अत: धरती का तापमान बढ़ रहा है । इसी कारण ओज़ोन-परत में छिद्र हो गया है। यदि उस छिद्र में वृद्‌धि होगी, तो संपूर्ण धरती सूर्य की पराबैंगनी किरणों का शिकार हो जाएगी । अत: ध्यान रहे कि पेड़ों की रक्षा यानी कि हमारी अपनी स्वयं की रक्षा । इसीलिए पेड़ लगाओ - देश बचाओ । इस नारे पर हमें अमल करना होगा ।

3) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए । (60 से 80 शब्दों में)

1) **मेरा प्रिय वैज्ञानिक** **5**

''भारत माँ का अमर सपूत,
माँ का मान बढ़ाने आया ।
परमाणु के शांतिपूर्ण उपयोग में,
अपना हाथ बढ़ाने आया ।''"

हमारे देश में कई महान वैज्ञानिकों ने जन्म लिया। जिन्होंने अपने कार्य से भारत देश को उन्नति के शिखर तक पहुँचाया । मैं जिनके कार्यों से अत्यंत प्रभावित हूँ, वे हैं - डॉ. होमी जहाँगीर भाभा । ये मेरे प्रिय वैज्ञानिक हैं। जब पूरा विश्व सभी क्षेत्रों में प्रगति कर रहा था, परमाणु-ऊर्जा जब एक चर्चा का विषय था, उस समय भारत इस क्षेत्र में कहीं भी नहीं था । लेकिन तभी भारत माता के इस अमर सपूत ने अपने परमाणु ऊर्जा के ज्ञान की चकाचौंध से दुनिया को चकित कर दिया । आज भारत ने परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में जो कुछ किया, हमारे देश में जितने भी परमाणु - शक्ति स्टेशन हैं, वह डॉ. भाभा के सफल प्रयासों की वजह से हैं । हमारे देश में परमाणु-ऊर्जा कार्य की शुरुआत 1945 में डॉ. भाभा ने ही की थी । वे ही 'भारतीय परमाणु ऊर्जा कमिशन' के प्रथम सभापति थे । डॉ. भाभा का जन्म 30 अक्टूबर, 1909 को मुंबई में हुआ था । इनकी प्रारंभिक शिक्षा भी मुंबई में हुई । स्नातक होने के बाद वे उच्च शिक्षा के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्‌यालय गए ।

अपनी पढ़ाई के दौरान उन्हें बहुत से वजीफे और मैडल प्राप्त हुए । कैम्ब्रिज विश्वविद्‌यालय में उन्होंने फर्मी और पौली जैसे वैज्ञानिकों के साथ काम किया । 1937 में भाभा ने कॉस्मिक किरणों के क्षेत्र में वॉल्टर हिटलर के साथ काम किया । अपने इस कार्य के लिए उन्हें बहुत प्रसिद्‌धि मिली । 1940 में वे भारत लौट आए । 1945 में डॉ. भाभा ने टाटा अनुसंधान संस्थान की स्थापना की । एक कुशल वैज्ञानिक होने के साथ

डॉ. भाभा एक कुशल शासक भी थे । उनके कुशल नेतृत्व में भारतीय वैज्ञानिक परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में तेजी से प्रगति करने लगे । उनके इन्हीं प्रयत्नों के फलस्वरूप, 1946 में एशिया का पहला परमाणु रिएक्टर मुंबई के निकट ट्रॉम्बे में स्थापित किया गया ।

1955 में जेनेवा में हुए संयुक्त राष्ट्र की परमाणु के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए हुई सभा का प्रतिनिधित्व भी डॉ. भाभा ने किया । डॉ. भाभा ही पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने परमाणु बम पर रोक लगाने की पहल की थी। डॉ. भाभा अपनी योग्यता के बल पर ही पहले प्रधानमंत्री पंडित नेहरू और दूसरे प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के वैज्ञानिक सलाहकार थे । डॉ. के संरक्षण में पहला परमाणु शक्ति स्टेशन तारापुर नगर में बनाया गया ।18 मई, 1964 को भारत का पहला न्युक्लियर संयंत्र पोखरन (राजस्थान) में डॉ. भाभा के अनुसंधान कार्य के फलस्वरूप स्थापित किया गया ।

कुल मिलाकर डॉ. भाभा की वैज्ञानिक सफलताएँ गिनी नहीं जा सकती । ये महान वैज्ञानिक 25 जनवरी, 1966 में एक वायु दुर्घटना की वजह से स्वर्गवासी हो गए । डॉ. भाभा के सम्मान में ट्रॉम्बे में स्थित परमाणु ऊर्जा संस्थान का नाम 'भाभा परमाणु अनुसंधान' कर दिया गया । डॉ. भाभा एक अच्छे कलाकार भी थे। उन्हें साहित्य और कला में विशेष रुचि थी ।

उनका जीवन अत्यंत सीधा और सरल था । वे एक अच्छे वक्ता और मधुरभाषी थे । अपने इन महान उपलब्धियों और गुणों की वजह से न सिर्फ वे भारत के बल्कि पूरी दुनिया के चहेते थे । इस महान वैज्ञानिक की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है ।

विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे वह,
नाम था - होमी जहाँगीर भाभा ।
अपने ज्ञान के बल पर जिसने,
जीत लिया था दिल दुनिया का । "

2) **<u>पर्यावरण व विकास</u>** **5**

'पर्यावरण' शब्द 'परि' तथा 'आवरण' दो शब्दों से मिलकर बना है । इसका अर्थ है – चारों ओर का वातावरण, जिनसे पृथ्वी ढकी और सुरक्षित है। इसमें जल, मिट्टी, वायु, गैस, पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ आदि सभी शामिल हैं । ये सब मिलकर एक संतुलित वातावरण तैयार करते हैं, जिन पर समस्त प्राणियों का अस्तित्व निर्भर होता है। जब - जब किसी भी कारणवश इनके साथ छेड़खानी की गई, इनके नियमों का उल्लघंन किया गया; तब - तब मनुष्य प्राकृतिक विपदाओं का शिकार हुआ है । चाहे वह बाढ़ की विभीषिका हो या अकाल की चपेट ।

प्रकृति ने हमारे लिए एक माँ की तरह सुखद, सुरक्षित एवं स्वस्थ वातावरण का निर्माण किया है । हमें उसकी रक्षा करते हुए उसका उपभोग करना चाहिए । कहा गया है - रक्षये प्रकृति पांतुलिका । अर्थात प्रकृति प्राणियों की रक्षा करती है । लेकिन हम मनुष्य अपने स्वार्थ और भौतिक सुखों की होड़ में प्रकृति माँ के इस वरदान की उपेक्षा कर उसे दूषित करने में लग गए । जैसे-जैसे मनुष्य विकास की तरफ बढ़ता गया, वैज्ञानिक आविष्कार होते गए, वैसे-वैसे पर्यावरण-प्रदूषण का खतरा भी बढ़ता गया ।

पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या आधुनिक युग की देन है । वैज्ञानिक उन्नति के साथ उद्योग धंधों का विकास हुआ । अनेक कल-कारखाने स्थापित हुए । अनेक घातक अस्त्र-शस्त्र बनने लगे । इन सबसे उत्पन्न

जहरीले पदार्थ वायु, जल में मिलकर उसकी प्राकृतिक रचना को असंतुलित करने लगे । तब जीवन रक्षक यही पर्यावरण हमारे लिए घातक बनना शुरू हो गया ।

विकास की इस अंधी दौड़ ने हमारी नदियों के शुद्ध जल को भी प्रदूषित कर दिया है । कल-कारखानों का गंदा पानी सीधे नदियों में बहा दिया जाता है । इसी दूषित जल को पीने के लिए मनुष्य बाध्य है और अनेक रोगों का शिकार हो जाता है ।

वाहनों के नित नए विकास और उनकी बढ़ती तादाद ने हमारे प्राणवायु को भी जहरीला बना दिया है । वाहनों से निकले गैस, धुआँ मनुष्य के जीवन में जहर घोल रहे हैं ।

वैज्ञानिक उन्नति ने मनुष्य को जहाँ विकास के अवसर सुलभ कराए, वहीं वह हमारी त्रासदी का कारण भी बना । भोपाल गैस की दुर्घटना इसका ज्वलंत उदाहरण है । इसमें हजारों लोग मौत की नींद सो गए और जो बच गए वह विकलांग होकर मजबूर हो गए । विकास के इस अभिशप्त जीवन को भोगने के लिए । प्रत्येक विकासशील देश स्वयं को सामरिक दृष्टि से संपन्न बनाने के लिए हथियारों की होड़ कर रहा है । परमाणु-परीक्षण से जो रेडियोधर्मी तरंगे बनती हैं, वह वर्षों तक नष्ट नहीं होतीं और वायुमंडल में मिलकर पीढ़ी दर पीढ़ी के लिए अभिशाप बनकर उपस्थित हो जाती हैं ।

पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाला सबसे बड़ा कारण है - जनसंख्या की वृद्धि। बढ़ती माँगों को पूरा करने के लिए कृत्रिम खादों का बढ़ता प्रयोग, कीटनाशक दवाओं के लगातर छिड़काव ने भूमि और उसके भीतरी जल तथा वायु सबको प्रदूषित किया है । आवास की समस्या हल करने के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई ने पर्यावरण को सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाया है । समय-समय पर आने वाली प्राकृतिक विपदाएँ इसका प्रमाण हैं । प्राचीनकाल में इन्हीं विपदाओं से बचे रहने के लिए पेड़-पौधों, वनों को देवी-देवत समझकर उन्हें पूजा जाता था । मनुस्मृति में तो पेड़ काटनेवालों को दूसरे नरक का भागी बताया गया है -

''छेदनं वृक्ष जातीनां द्वितीय नरकं स्मृतम् ।'' पर्यावरण को बचाने के लिए जागरूकता फैल तो रही है, पर जब तक प्रत्येक नागरिक इसके लिए अपना योगदान नहीं देता, तब तक यह सफल नहीं हो सकता । पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए निम्नलिखित कार्य किए जाने चाहिए - अधिकाधिक मात्रा में वृक्ष लगाए जाएँ और उनका संरक्षण किया जाए। नदियों के जल को प्रदूषित करने वालों को कड़ा दंड दिया जाए । तेज ध्वनि के उपकरणों, वाहनों पर ध्वनिनियंत्रण लागू किया जाए । इनका उल्लंघन करने वालों को कड़ी से कड़ी सजा देने पर ही ये फलीभूत हो सकता है ।

अभी भी वक्त है । यदि समय रहते मनुष्य सचेत न हुआ तो मानवजीवन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा । अत: यह शस्य-श्यामला वसुंधरा, जो एक माँ की तरह हमारी रक्षा करती है, हमारा पोषण करती है, उसके प्रति हमारा कर्तव्य है कि उसे सुरक्षित रखने में पूरा योगदान करें । वरना वह दिन दूर नहीं जब अपनी जीवन-डोर हम खुद अपने हाथों से काट बैठेंगे ।

❖❖❖❖